स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड (महाराष्ट्र)

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड.

मानविकी विद्या संकाय अंतर्गत
पीएच.डी. (विद्यावाचस्पती) हिन्दी उपाधी हेतु

◆ प्रस्तावित ◆
शोध विषय की रूपरेखा

◆ शोध विषय ◆

"श्री भगवती चरण वर्मा और विभावरी शिरूरकर के उपन्यास साहित्य में नारी संवेदनाओं का तुलनात्मक अध्ययन"

◆ शोध छात्रा ◆
कु. पठाण खातुन बेगम अकबर खॉन
एम. ए. (हिन्दी, तत्व), बी.एड., एम. फिल (हिन्दी)

◆ शोधनिर्देशक ◆
डॉ. शेख शहेनाज बेगम अहेमद
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय
हिमायतनगर ता. किनवट जि. नांदेड

सन -२०१७

"श्री भगवती चरण वर्मा और विभावरी शिरूरकर के उपन्यास साहित्य में नारी संवेदनाओं का तुलनात्मक अध्ययन"

प्रस्तावना :-

उपन्यास हिन्दी गद्य-साहित्य की आधुनिक विधा हैं जिसमें उपन्यासकार कथानक पात्र, चरित्र-चित्रण की अनेक पध्दतियों, परिवेश तथा भाषा-शैली द्वारा उद्देश्यों अथवा जीवनादर्शो को रूपायित करता हैं। उपन्यास में वास्तविक जीवन को काल्पनिक कथा के रूपमें प्रस्तुत किया जाता हैं, इसी कारणों लेखक सामाजिक परिवेश से मनुष्य को पात्रों को कार्यों भावों, विचारों अनुभवों एवं पारस्पारिक सम्बधों द्वारा अभिव्यक्ति देता हैं। कथानक व पात्रों का अटूट सम्बन्ध हैं। अतः कथानक को उपन्यास सूत्र एवं पात्रों के चरित्र-विश्लेषण को उसका प्रमुख प्रतिपाद्य कहा जा सकता हैं।

उपन्यासों में समाज की भाँति ही पुरूष व नारी को आधार बनाकर उनके सहयोग द्वारा समाज का सृजन किया जाता हैं। नारी का सृष्टि के प्रारम्भ से ही महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं। उसके योगदान के अभाव में संस्कृति की कल्पना ही अधूरी हैं। नारी सदैव पुरूष की प्रेरणादायिनी शक्ति रही हैं। तथा माता बहन, पत्नी व प्रेमिका आदि रूपों में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र एवं लक्ष्य-प्राप्ति में उसकी सहायक सिध्द हुई, फिर भी वह पुरूष समाज द्वारा शोषित व अपमानित होती रही हैं।

◆ हिन्दी साहित्य में नारी :-

साहित्य में जब हम नारी के योगदान पर विचार करते हैं तो यह स्पष्ट होता हैं कि वैदिक काल से ही साहित्य के क्षेत्र में नारी का योगदान रहा हैं। प्रारंभिक काल से ही नारी को समाज की एक महत्वपूर्ण ईकाई माना गया था। इसीलिए समय-समय पर चलनेवाले सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक आंदोलन से भी भारतीय नारी का सम्बध रहा हैं। जहाँ तक साहित्य का सम्बध हैं, साहित्य के विकास में उसका योगदान उल्लेखनिय रहा हैं। वेद, पुरान स्मृतियाँ, ऐतिहासिक ग्रंथ, दार्शनिक रचनाएँ, आदि में पुरूष के समान ही नारी को अधिकार दिया गया हैं।

प्राचीन भारत में तो नारी को गृह लक्ष्मी कहा गया हैं। यहाँ तक कि "यत्रथा नारीयस्तु पुंजते रमंते तत्र देवता" अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती हैं, वहीं देवता निवास करते हैं। यह भी कहा गया है। इस से यह स्पष्ट होता हैं कि वैदिक काल में इस देस में नारी को बड़ा गौरवपूर्ण

स्थान प्राप्त हुआ था। गार्गी, मैनोची, घोष, आदि नारियाँ इसके उदाहरण हैं। गार्गी और मैनोची की ब्रिदवत्ता की प्रशंसा ऋषियों ने मुक्त कंठ से की थी। यह काल ही ऐसा था, जहाँ नारी को पूर्ण स्वातंत्र्य था। इसका विवाह उसकी इच्छा के अनुसार ही हुआ करता था। विधवा नारी को फिर से विवाह कर घर बसाने का अधिकार था। साहीत्य सृजन के साथ-साथ रणभुमि में भी नारी का पूरा सहयोग रहा था।

◆ नारी का स्वरूप :-

◆ वैदीक काल में नारी का स्वरूप :-

प्राचीन काल में अक्सर आर्यो के समाज में कुमारी कन्या के लिए युवती योषा, योषगा, और योषण शब्द का प्रयोग किया जाता हैं। वैसे देखा जाय तो 'योषा' युवा स्त्री के अर्थ में भी प्रयोग किया जाता था। जीवन अथवा सुव्यवस्थित परिवार में बहुत सम्मान किया जाता था। यदयपि उस समय भी पुत्री की अपेक्षा पुत्र को ही अधिक महत्व दिया जाता था। फिर भी अनेक स्थानों पर संतति (संतान) के लिए पुजापाठ प्रार्थना अथवा यज्ञ वगैरह का उल्लेख मिलता हैं।

अत: हम कह सकते हैं कि ऋग्वेद में कही पर भी पुत्री की उपेक्षा किये जाने का उल्लेख नहीं हुआ हैं। उसका कारण यह भी था कि उस समय कन्या (पुत्री) को बेटों की तरह वेदों का अध्ययन और देवताओं को बलि चढाने का अधिकार प्राप्त था। उसे अपना पति चुनने की स्वतंत्रता थी। नियोग और विधवाओं को पूर्नविवाह के लिए अनुमति प्राप्त थी। हाँ इतना आवश्य था कि प्राचीन काल में सभी लोग बेटी की अपेक्षा बेटे को अधिक महत्व देते थे। क्योंकि उनका मानना था कि बेटे वंश को बनाये रखते हैं। वे युद्ध में विजय में सहायक होते हैं। और माँ बाप के यश अथवा कीर्ति का कारण होते हैं।

◆ आझादी के पूर्व पाश्चात नारी की स्थिती :-

आझादी के पूर्व देश की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का आकलन करते हुए नारी जागरण के मूल बिन्दु को स्पर्श करने का कार्य कुछ साहित्यकारों विचारकों के माध्यम से करके नारी समाज की अधोगति को रोकने का प्रयास हुआ। क्योंकि साहित्य को समाज का प्रतिबिम्ब माना जाता है, और साहित्यकार को समाज चेता अत: हिन्दी साहित्यकारों ने अपने उत्तरदायित्व को ध्यान में रखते हुए जागृत समाज की राष्ट्रीय सामाजिक और साहित्यिक चेतना का चित्रण प्रस्तुत किया। शुरुआत में साहित्यों में नारी समस्या का आंकलन घीसी-पिटी सामाजिक रूढियों के संदर्भ में किया गया। इन साहित्यकारों ने नारी की प्रतिष्ठा को मुलरूप से पुरानी सांस्कृतिक

रूढियों की कसौटी पर सोचने की कोशिश की। जो वैचारिक एवं सांस्कृतिक धरातल पर पाश्चात्य और भारतीय संस्कृति का संघर्ष काल रहा है।

तत्कालीन समाज सूधारक नये विचारों के अनुसार समाज कार्य में लगे हुए थे। ये लोंग पाश्चात्य परंपरा से काफी प्रभावित होने के कारण हिन्दू समाज और उनकी सामाजिक व्यवस्था पर अक्रोशित ढंग से हल्ला बोल रहे थे। ईसाईल मिशनरियाँ भी अपनी सभ्यता के प्रचार-प्रसार में जुटी थी। ऐसी स्थिति में इसे दोनों सांस्कृतियों का संघर्ष काल अथवा परिवर्तन काल कहा तो जा सकता हैं। लेकिन इस प्रकार के एकाएक परिवर्तन की लहर को कोई भी स्वीकार करने को तैयार नहीं हो रहा था। सदियों से सामाजिक व्यवस्था और मूल्यों में जकडी हुई जनता अपने संस्कारो एवं जीवन के आदर्शो को एकदम कैसे छोड़ सकते थे।

◆ नारी स्वरूप का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण :-

हम देखते हैं कि मानव मन जब दु:खी अथवा व्यथित होता हैं। तब वह कुछ असामान्य तरीके से व्यवहार करने लगता हैं। कभी-कभी वह मन के विद्रोह को शांतभाव से सहन करते हुवे विद्रोह के इस उदात्तीकरण को न्यायिक रूपसे और उँचा स्थान देकर उसका विश्लेषण करते हुए कहता कि अब वह उसके जीवन का कल्पित केंद्र बिन्दू मिट जाने के कारण जीवन की यथार्थता के प्रति उसका मन सजग हो चुका हैं। व्यक्तिगत जीवन का मोह अब रोष न रहने के कारण सामुहिक जीवन की उपलब्धि में रूचि लेने के बारे में सोंचना चाहिए। वह महसुस करता हैं कि निश्चित ही प्रभु की माया अब उस पर नहीं चलेगी। उसके सारे अंधविश्वासों का घरौंदा। टूट चुका हैं। जो अब फिर से नही किया जा सकता है; और ना ही उसे बनाने की प्रवृत्ति उसमे शेष रह गयी हैं। इस प्रकार वह अपने अंतर्मुखी प्रवृत्ति का चोला उतार कर फेंक देता है और खुद को बर्हिमुखी बनाकर समाज सुधार और देश की प्रगति के कार्यो में लागाता हैं। वह पारिवारिक जीवन को तिलांजलि देने के बाद विश्राम को दूर रखकर सारा दिन श्रम और केवल श्रम को अपनाता हैं। और लोगों को भी समाज कार्य अपनाने का मंत्र देता हैं।

तत्कालीन साहित्यकारों ने अपने साहित्यों में जिस प्रकार के नारी पात्रों की सृष्टी की हैं, उसमें से अधिकांश नारी पात्रों का स्परूप कुछ इस प्रकार दिखाई देता हैं। इनमें कुछ बुनियादी तत्त्व ऐसे भी हैं जो सामान्यता:हर प्रकार के नारी पात्रों मे उल्लेख किया हैं। जैसे ..... नारी पात्रों में विवेक और अनुराग का समिश्रण आजादी के लिए संघर्ष करना अपना और अपने पारिवारिक जीवन को सफल सार्थक बनाने के लिए जद्दोजहद करना एकांकी जीवन जीने का निर्णय लेना चेतना के प्रवाह में बहनेवाली जीवन की गतिशीलता को अपनाना आनंद, भोग,

विलास, वैराग्य के क्षणों में स्वयं से साक्षात्कार करने का संघर्ष आदि। इन सभी समान तथ्यों और विशेषताओं के आधार पर की गई रचनाओं मे नारी पात्रों का जो स्वरूप हमारे सामाने आता हैं, वह एक विशिष्ट संभ्रान्त, स्वतंत्र शिक्षित, संघर्षशील आधुनिक नारी का हैं। इन रचनाकारों के व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब इन नारी पात्रों के स्वरूप पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता हैं। क्योंकि इनकी रचनाओं की सभी नारी पात्र व्यक्तित्ववान होने के साथ सभी का अपना-अपना सौन्दर्य बोध अपनी-अपनी वेदना, अपने-अपने जीवन की गहनता और सबकी अपनी अलग-अलग सत्ता इसका प्रमाण हैं। इन सभी नारी पात्रों का जितना भी स्वरूप हमारे सामने आता हैं वह उससे कहीं अधिक अपने व्यक्तित्व का आभास कराते हुए कुछ नये संकेत ही देने की कोशिश करती हैं। सभी नारियाँ चारित्रगत विशेषणताओं के बल पर लोगों के मन पर ऐसी अमिट-छाप छोडकर जाती हैं। जो उनके अतीत और भविष्य के बारें में हमे सोचने पर विवश करती है।

◆ हिन्दी साहित्य में नारी स्वरूप का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण :-

भारतीय जीवन के विकास क्रम में नारी को प्रतिष्ठित करने के लिए उसके व्यक्तित्व का चित्रण सहज और स्वाभाविक हुआ हैं। आधुनिक हिन्दी उपन्यास कारों ने नारी पात्रों के निर्माण की भावभुमि, उनके व्यक्तित्व का विकास जिन सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में हुआ हैं। आधुनिक हिन्दी उपन्यासकारों ने नारी पात्रों के निर्माण भावभुमि उनके व्यक्तित्व का विकास जिन सामाजिक, राजनितिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में हुआ हैं। उस समय ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के कारण चारों और असंतोष का अंधकार और ब्रिटिश शासन के प्रति विद्वेष की भावना फैली हुयी थी। अंग्रेजों में भारतीय जनता के शोषण की प्रवृत्ति अधिक थी। जिससे हमारे समाज का ढाँचा चरमरा कर रह गया था। अंग्रेजो ने जिन किसी प्रांन्तो पर अपना अधिकार जमाया था वहाँ के सभी छोटे-छोटे घरेलू उदयोग धंदो तक को भी अपने व्यापार को बढावा देने के लिए बंद करवा दिया।

उपरोक्त कारणें से हिन्दुस्तान की आर्थिक स्थिति खराब होने लगी क्योंकि उस घरेलू उदयोग धंदो में किसानों की औरतें भी अपने पतियों के साथ सहयोग करती थी। उसके लिए कारीगर कच्चा माल गाँव से ही पाता था; जैसे- लकड़ी मिट्टी, पशु का चमड़ा, रुई आदि। इन कामों को प्रायः जुलाहा, सुनार, बढई, लोहार , चमार, धोबी, नाई, तेली इ. किया करते थे। उनके परंपरागत सभी काम संतोषजनक रहता था। और ये लोग भी उस कार्य से संतुष्ट थे। प्रान्तों या देहातों के इन कामों को अचानक बंद करवा देने से इनकी आर्थिक स्थिति खराब हो

गई। जिससे ग्राम संस्था का ऱ्हास हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि स्थानिक स्वराज्य और घरेलू व्यवसाय दोनों का सफाया हो गया। परिणामतः समाज में कई प्रकार के वर्ग निर्मित हो गये। जमीदारों और जागीरदारों का भी निर्माण यही से हुआ माना जा सकता हैं। ये लोग किसानों पर मनमाना अत्याचार करने के लिए स्वतंत्र थे।

साहित्य के क्षेत्र में भी भारतीय नारियों ने अपना परचम लहराने में विशेषता हासिल करते हुए वैदिककालीन नारियों की बराबरी में आने की कोशिश की हैं। राजा राममोहन राय ने नारियों के अर्तमुखी स्थिति को समझकर समाज में उनकी स्थिति सुधारने के लिए नारी को शिक्षित करने का जो महान कार्य किया उनके कार्य से प्रेरित होकर पंडिता रमाबाई जैसी विदुषी महिला स्त्री- शिक्षा कार्य के लिए आगे आई उसका ही परिणाम है कि आज भारतीय नारियों ने साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय हैं। छायावाद की पुरस्कर्ती कवयित्री महादेवी वर्मा ने अपने काव्य के माध्यम से दुःखावाद पीड़ावाद, नैराश्यवाद, रहस्यवाद आदि की अभिव्यक्ति को निरुपित किया हैं। जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता हैं। उन्होंने वेदना या दुःख में विरह और मिलन की अनुभुति प्राप्त की हैं उन्होंने अश्रु सिंचन से ही जीवन को विरह का जलजाता बना दिया हैं। इसीलिए अपना परिचय "मैं नीर भरी दुःख की बदली कहकर देती हैं।" राष्ट्रीय जागरण करनेवाली मशहुर हिन्दी कवियित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रसिद्ध कविता 'खूप लडी मरदानी' वह तो झाँसी वाली रानी थी।' अमरगाथा बन गयी। पंजाबी भाषा की अमृत प्रीतम, उडीसा की कुन्तला कुमारी तथा बंगाल की राधारानी देवी जैसी मशहुर कवयित्री अपनी कोमल भावनाओं को छन्दबद्ध करने में सफल रही हैं।

◆ **नारी की स्थिति :-**

◆ **नये दौर में नारी की स्थिति :-**

आज नारी का मानसिक और बौद्धीक विकास संपूर्ण तथा परिपक्वता के रुपमें दृष्टिगोचर होता हैं। इस विकास यात्रा में नारी को जो मानसिक कष्ट उठाना पडा हैं, उसने कई साहित्यकारों के ऱ्हदय में आँसु बहाने का भी कार्य किया हैं। उन लोगों के ऱ्हदय में नारी के यथार्थवादी रूप का बहुत अधिक प्रभाव पडा। साहित्यकारों ने नारी की भावना उनके सुख-दुःख उनकी दमन वृत्तियों तथा व्यक्ति की समस्या न मानकर सामाजिक समस्या मानते हुए उसे आदर्श रुप देने की कोशिश की। इस तरह सामाजिक परिस्थितियाँ इतनी तीव्र रूप धारण करती गई कि व्यक्ति और समाज, परंपरा और आधुनिकता नैतिकता और अनैतिकता, स्वातंत्रता और गुलामी के बीच खाई पैदा हो गई। परिणामतः साहित्यकारों ने मानवी पात्रों को व्यक्ति के

रूप में देखने लगे। व्यक्ति के बाहय रूपको समझने में समाज भारतीय अध्ययन और मनो विज्ञान से काफी मात्रा मे मदद की। मनोवैज्ञानिक विद्धांतो के आधार पर उनकें चिंतन शक्ति एवं परखने की शक्ति को एक नई दिशा मिली। इसकी वजह से मनुष्य के अंदर रहस्यों को बहुत ही गहराई के साथ उद्‌घाटित करने में सफलताएँ हासिल हुई।

आज नारी पात्रों को लेकर उस धरातल पर देखने और परखने की क्रिया का एक आधुनिक प्रश्न के उदय के रूपमें किया जाने लगा है। जो वास्तव में नारी की आधुनिकता और शिक्षा के सवालों से जुडा हैं। शिक्षा प्राप्त करने की वजह से आज नारी जागृत जीवन की गतिविधीयों में सक्रियता से भाग ले पा रही हैं। ज्ञान का प्रकाश उदय होने पर ही नारी को अपनी समस्याएँ, स्वतंत्रता, विवाह प्रेम के बारे मे तथा भक्ति मार्ग जीवन और मृत्यू के बारे में भी विचारशील हुई। इस प्रकार से कुछ नारियाँ अपने आस्तित्व को लेकर भी सोचने को विवस हुई। शिक्षित होकर विरोधी शक्तियों और आनेवाली सभी समस्याओं का मुकाबला करने योगय बनी।

इसी प्रकार नारी का स्वाभिमान स्वाभाविक रूप से मुखरित हुआ। नारियों का स्वावलंबी और आत्म निर्भर बनना शिक्षा के कारण ही संभव हो सकता है। परिणामतः सामाजिक रूढ़ियों की दासता से मुक्त हो सकी। आज की नारी दृढ विश्वास के साथ अपना कर्य करने में ही सच्चे सुख का अनुभव प्राप्त करती हैं। वह अपनी आत्मरक्षा के लिए आर्थिक प्रश्नों के प्रमूख मानकर रोजी रोटी की समस्या को भी स्वयं हलकर रही है। और अपना आर्थिक और सामाजिक स्थिति को उच्च बनाने के लिए संघर्ष करते हुए आगे बढ रही हैं।

◆ नये दौर की नारी स्वरूप के विविध पहलू :-

◆ नारी के बदलते पारिवारिक रिश्ते :-

परिवार समाज की प्रारंभिक ईकाई होती हैं। बिना परिवार के सामाजिक निरंतरता संभव नहीं। यह परिवार ही है जहाँ नये बच्चे जन्म लेकर मृत व्यक्ति द्वारा कह सकते हैं कि परिवार द्वारा मृत्यू और अमरत्व दो परस्पर विरोधी आवस्थाओं का सुंदर समन्वय होता रहता हैं। परिवार प्रकृति द्वारा मनुष्य की दैनिक जरूरतों की पुर्ति करनेवाला एक स्थापित समुह होता हैं जो गृहस्थी का निर्माण करते हुए पति-पत्नी, माता-पिता, पुत्र-पुत्री तथा भाई-बहन के रुपमें निर्धारीत सामाजिक कार्य का वहन करता है। साथ ही स्वयं द्वारा निर्मित संस्कृति की रक्षा भी करता हैं। अतः हम कह सकते हैं कि समाजरूपी विशाल भवन की नीव में परिवाररूपी एक

ऐसी ईट लगी हुई हैं, जिसमें से यदि परिवार का आधार हटा लिया जाय तो सारा समाज धाराशायी हो जाएगा।

◆ नारी जीवन में बदलते प्रेम के रिश्ते :-

प्रेम शब्द का भाववाचक रूप 'प्रिय' होता हैं और प्रिय का अर्थ प्रेम का उत्तम, मध्यम, और निष्कृष्ट ऐसे तीन भागों मे विभक्त किया जा सकता हैं। उत्तम प्रकार के प्रेम में उल्लास, ममता, प्रिय के गुणों का अभिमान आतिशय अभिलाषा आदि गुण होते हैं। जिनसे प्रेमी के हित का संस्कार होता हैं। उत्तम प्रेम में स्वार्थ नहीं होता हैं।

कई लोग वासना को प्रेम मानते है जबकि वासना और प्रेम में अंतर होता है। वासना शारीरिक आकर्षण का भाव होता हैं जिसका पर्यावसान भोग से होता हैं तथा वह क्षणिक होता हैं। प्रेम हार्दिक तथा एकरस होता हैं। प्रेम आसक्ति प्रधान साधन प्रधान, भावात्मक और आशा प्रधान होता हैं।

- नारी जीवन में बदलते सामाजिक रिश्ते :
- नारी जीवन में बदलती सामाजिक समस्याएँ :
- नारी जीवन में बदलते धार्मिक संदर्भ :
- अपराध एवं अत्याचार :

◆ महिलाओं के प्रति होता अपराध :-

हमारे देश में पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था जरुर है लेकिन कहीं-कहीं स्त्री प्रधान समाज भी दिखाई देता हैं। पुरुष प्रधान समाज में पुरुष की इच्छा सर्वोपरि मानी जाती हैं। आज महिलाओं के प्रति अपराध का बाहुल्य दिखाई देता हैं। दहेज अधिकार और अनेक कुरितयों के बीच विवाहीत महिलाएँ अपना जीवन व्यतित करती रही हैं।

प्रकृति ने सृष्टि के स्वयंचालन के लिए नर और नारी को पैदा किया हैं। जिसमें दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। एक-दूसरे के बिना इनका जीवन अधूरा माना जाता हैं। विकास के पथ बर समज रूपी पक्षी के ये दोनों होते है। इसमे स्त्री कोमल स्वभाव की तथा पुरुष कुछ कठोर स्वभाव के होते हैं। स्त्रियों के इसी कोमल और मृदू स्वभाव के कारण उन्हें सुरक्षा की जरूरत महसुस की जाती हैं। हमारे, सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत स्त्रियों को बाल्यकाल में पिता अथवा भाई के विवाह के बाद पति और वृद्धावस्था में पुत्र के द्वारा संरक्षित किया गया है।

◆ **कन्या भ्रूण हत्या :-**

आज हमारे देश में स्त्री पुरुष अनुपात में महिलाओं की संख्या में तेजी से गिरावट आ रही हैं। इसका कारण कन्या भ्रूण हत्या दिखाई देता हैं। क्योंकि आजकल लोग कन्या के जन्म को अभिशाप मानने लगे हैं। जिसके कारण वे कन्या को माँ की कोख में ही मरवा (गर्भपात) देते हैं। वैसे देखा जाय तो तीन माह से अधिक समय के भ्रुण का गर्भपात कराना भारतीय दंड संतिता की धारा ३१२ व ३१६ के तहत एक गंभीर दंडणीय अपराध माना जाता हैं। फिर भी लोग इन कानूनों को ताक पर रखकर लिंग परिक्षण करवाये पाये जाते हैं यह स्थिति ग्रामीण नगरीय अथवा शिक्षित व अशिक्षित सभी लोगों में देखी जाती हैं। आज के समाज में ऐसी अमानवीय घटनाएँ आम होती जा रही हैं। आज लड़की का होना पाप समझने लगे हैं। शायद इसीलिए अजन्मी कन्या का वध माँ के गर्भ में ही कराते दिखाई देते हैं। यही हमारा देश और हमारी संस्कृति थी जहाँ पर लोक कन्या को लक्ष्मी की उपमा दिया करते थे। परंतू आज किस प्रकार से यह विपरीत स्थिति निर्मित हो रही हैं। इस पर सभी को गंभीरता के साथ चिंतन करने व ऐसी स्थिति को बनने देने से बचने का गंभीरता के साथ प्रयास करना चाहीए।

◆ **अनुसंधान की भुमिका :-**

हमारे देश में पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था जरुर हैं, लेकिन कही-कहीं स्त्री प्रधान समाज भी दिखाई देता हैं। पुरुष प्रधान समाज में पुरुष इच्छा सर्वोपरी मानी जाती हैं। पुरुष इच्छा सर्वोपरी मानी जाती हैं। आज महिलाओं के प्रति अपराध का बाहुल्य दिखाई देता हैं। दहेज अधिकार और अनेक कुरीतियों के बीच विवाहित महिलाएँ अपना जीवन व्यतित करती रही हैं।

प्रकृति ने सृष्टी के संचालन के लिए नर और नारी को पैदा किया हैं। जिसमें दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। एक दूसरे के बिना इनका जीवन अधूरा माना जाता हैं। विकास के पथ पर समाज रूपी पक्षी के ये दोनों पंख होते हैं। इसमें स्त्री कोमल स्वभाव की तथा पुरुष कठोर स्वभाव के होते हैं। स्त्रियों के इसी कोमल और मृद स्वभाव के कारण उन्हें सुरक्षा की जरुरते महसुस की जाती है। हमारे सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत स्त्रियों को बाल्यकाल में पिता अथवा भाई के विवाह के बाद पति और वृद्धावस्था में पुत्र के द्वारा संरक्षित किया गया हैं।

हमारे देश को आजादी प्राप्त होने के बाद भारतीय दंड संहिता में महिलाओं के प्रति अपराध एवं महिलाओं के सील के लिए तथा उन्हें समानता का एक देने के लिए कुछ विशेष धाराओं का वर्णन करते हुए अपराधों के लिए दंड देने का प्रावधान किया गया हैं। लोगों का

मानना है कि आज अशिक्षित ही नहीं बल्कि शिक्षित महिलाओं का भी अपने अधिकार तथा अपने प्रति हो रहे अपराधों का पूरा ज्ञान नही हैं। यहाँ तक कि आज कानून की सहायता भी उन्हें किसी पुरुष के माध्यम से ही मिल पाती हैं। इसीलिए शिक्षित महिलाओं और समाज सेवी संस्थाओं को चाहिए कि वे अपने क्रिया-कलापों में बदलाव लाकर महिलाओं में और अधिक जागृति निर्माण करे तथा उन्हें कायदे-कानून की प्रारंभिक जानकारी मुहैया करायें। कानूनी प्रक्रिया और निर्धिक जानकारी को सरल भाषा में उतारकर लोगों तक पहुँचाने की कोशिश को गति दिया जाये।

हमारे देश में कानून आयु एवं स्थिति के अनुसार अठारह साल से कम उम्र की लडकी को अवयस्क और अठारह वर्ष से अधिक किन्तु अविवाहीत युवती को वयस्क महिला माना जाता हैं। समाज में प्रचलित रीति अथवा कानुन के अनुसार युवतियों को शादी हो जाने के पश्चात विवाहीत महिला की श्रेणी में हैं। किसी आकस्मिक कारणों से किसी महिला के पति का देहान्त हो जाता हैं। तो ऐसी महिला को विधवा माना जाता है। इनके लिए भी कानुन में सम्पति पाने के अधिकारों का प्रावधान किया गया हैं। एक अप्रैल उन्नीस सौ तीस से बाल-विवाह अवरोध अधिनियम (१९२६) को हमारे देश में लागू किया गया हैं। जिसके अनुसार अठारह वर्ष से कम उम्र की लड़की तथा इक्कीस वर्ष की कम उम्र से कम कायदो का उल्लंघन करेगा तो उसे इस कानुन के अनुसार कारावास और जमीना से दण्डणीय किया जाएगा। परंतु कोई स्त्री कारावास से दण्डनिय नहीं होगी। वैसे हमारे देश में अनेक राज्यों और इन राज्यों की सामाजिक व्यवस्था एवं उनके परंपरागत सामाजिक नियम भिन्न-भिन्न हैं। इसलिए इनकी संस्कृति और परंपरा के अनुसार कुछ संशोधन भी किया गया हैं।

◆ हिन्दी साहित्य में उपन्यास साहित्य :-

उपन्यास हिन्दी गदय-साहित्य की आधुनिक विधा हैं जिसमें उपन्यासकार कथानक पता चारित्र चित्रण की अनेक पद्धतियों, परिवेश तथा भाषा-सैली द्वारा उद्देश्यों अथवा जीवनदर्शी को रूपायित करता हैं।

उपन्यास में वास्तविक जीवन को काल्पनिक कथा के रूपमें प्रस्तुत किया जाता हैं। इसी कारण लेखक सामाजिक परिवेश से मनुष्य को पानों के रूपमें ग्रहन कर, उन्हें सुनिश्चित व सुव्यवस्थित आकार-प्रदान करता है। कथावस्तु में निहित घटना विन्यास को भी वह पात्रों के कायों भावों, विचारों, अनुभवों, एवं पारस्पारिक सम्बधों द्वारा अभिव्यक्ति देता है। कथानक के

पात्रों का अटूट सम्बध एवं पात्रों के चारित्र विश्लेषण को उसका प्रमुख प्रतिपादय कहा जा सकात हैं।

उपन्यासों मे समाज की भाँति ही पुरुष व नारी की आधार बनाकर उनके सहयोग द्वारा समाज का सृजन किया जाता हैं नारी का सृंष्टि के प्रारम्भ से ही महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं। उसके योगदान के अभाव में संस्कृति की कल्पना ही अधूरी है। नारी सदैव पुरूष की प्रेरणा दायिनी शक्ति रही हैं। तथा माता, बहन, पत्नी व प्रेमिका आदि रूपों में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र एवं लक्ष्य प्राप्ति में उसकी सहायक सिद्ध हुई हैं। फिर भी वह पुरुष समाज द्वारा शोषित व अपमानित होती रही हैं।

◆ प्रस्तुत शोध विषय की आवश्यकता एवं महत्त्व :-

हिन्दी उपन्यासकारों मे श्री भगवतीचरण वर्मा का अपना विशेष स्थान हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी का ययार्थ एवं सजीव चित्रण करते हुए नारी सम्बधी समस्याओं का भी निरूपण किया हैं। नारी के प्रति उनका अपना दृष्टिकोन नितान्त भिन्न हैं। उनके चित्रलेखा चमेली, सरोज, विदया, जैदेई व रेखा आदी औपन्यासीक पात्र इतने प्रभावशाली ढंग से चित्रित किये गये हैं। कि वे पठकों के मानस पटल पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ जाते हैं। वर्मा जी ने नारी पात्रों की बाहय रूप-रेखा अत्यन्त आकर्षक एक उसके अन्तरिक भावों का मार्मिक चित्रण किया हैं। और उसके सभी पक्षों का सब्ज यथार्थ एवं सशक्त वर्णन करते हुए अमर नारी-पात्रों की सृष्टि की हैं।

◆ अनुसंधान का स्वरूप :-

श्री भगवती चरण वर्मा तथा उनके कथा साहित्य पर कई शोध-प्रबन्धों का प्रणयन विभिन्न विश्वविदयालयों में हो चूका हैं। किन्तु उनके उपन्यासों के नारी-पात्रों पर कोई शोध कार्य नहीं हों सका हैं। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध इसी अभाव की पूर्ति का विनम्र प्रयास हैं। श्री वर्मा जी के उपन्यास हैं, प्रेम और यौन समस्या को उजागर करते हुए नारी जीवन मुल्यों के विविध रुपों को प्रस्तुत करनेवाले उपन्यास हैं। 'तीन वर्ष' (१९३६), 'वह फिर नहीं आयी' (१९६०), 'रेखा' (१९६४), 'आखिरी दाँव' १९३०, 'अपने खिलौनें' (१९५७) आदि और ऐतिहासिक उपन्यास 'चित्रलेखा' (१९३९)।

◆ **प्रस्तुत शोध प्रबन्ध छह अध्यायों में विभाजित हैं :-**

प्रथम अध्याय:- श्री भगवतीचरण वर्मा और विभावरी शिरुरकर का व्यक्तीत्व एवं कृतित्व।

प्रथमं अध्याम में श्री भगवती चरणच वर्मा और विभावरी शिरुरकर के व्यक्तीत्व उसकी रचनाओं में समाविष्ठ होता रहता है। उपन्यास साहित्य को प्रेमचंद युगीन और प्रेमचन्दोत्तर युग में विभक्त कर तथा मराठी के उपन्यास के उद्‌भव और विकास में हरिभाऊ पुर्व युग, हरिभाऊ युग, में विभक्त करके नारी की स्थितीमें समया अनुसार होणेवाले सामाजिक राजनितीक, आर्थीक, नैतीक परिवर्तनोंकी समिक्षा की गई हैं ।

द्वितीय अध्याय:- श्री भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में नारी समस्याएँ :

द्वितीय अध्याय में नारी पात्रों के विभीन्न रूपों में विभाजीत करते हूए उनके चरित्र्य की विषेशताओं का विश्लेषन किया गया हैं।

तृतीय अध्याय:- विभावरी शिरुरकर के उपन्यासों में नारी समस्याएँ :

इस अध्याय में विभावरी शिरुरकर के उपन्यासों में नारी पात्रों के विभीन्न रूपों को विभाजीत करते हुए उनकी चरित्र कि विशेषताओं का तथा समस्याओं का विश्लेषन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय:- श्री भगवतीचरण वर्मा और विभावरी शिरुरकर के उपन्यासों के नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्याय :

श्री भगवती चरण वर्मा विभावरी शिरुरकर के उपन्यासों के नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

क) उपन्यास कथा में महत्व की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन ।

(अ) प्रमुख नारी पात्र (आ) गौण नारी पात्र

ख) पारिवारिक सम्बंधों की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन ।

(अ) माँ (आ) बहन (इ) पत्नी (ई) अन्यरूपो में

ग) सामाजिक स्थिति की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन ।

(अ) प्रेमिका (आ) विधवा (इ) वेश्या (ई) अन्य रूपों में

घ) वैचारिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन ।

(अ) परम्परावादी विचारोंवाले नारी पात्र

(आ) विद्रोही विचारोंवाले नारी पात्र

ड) मनोवैज्ञानिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन ।

(अ) सामान्य नारी पात्र (आ) असामान्य नारी पात्र

पंचम अध्यायः- श्री भगवतीचरण वर्मा और विभावरी शिरुरकर कें उपन्यासों का शिल्प शैली एवं भाषा का तुलनात्मक अध्ययन :

श्री भगवतीचरण वर्मा तथा विभारवी शिरुरकर के गद्य साहित्य की उपन्यास कहानी, नाटक, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज, निबंध इन भाषा शैली व व्यक्तीत्व की अपेक्षा रहती है। समालोचकों एवं विद्ववानों नें शैली के दो पक्ष निर्धारित किए गए है।

षष्टम अध्यायः- उपसंहार :

षष्टम अध्याय उपसंहार है इसमें सुपर्ण शोध-प्रबंध की उपलब्धी एक निष्कर्ष है।

अनुसंधान की उपलब्धि :-

प्रस्तुत शोध विषय को लेकर अनुसंधान का कार्य करना सर्व या अभिनय कार्य है। इस विषय को लेकर अभी तक कार्य नही हुआ। लेकिन मैं श्री भगवती चरण वर्मा जी के नारी पात्रों और विभावरी शिरुरकरजी के नारी-पात्रोंका सूक्ष्म चित्रण कर उनकी चारित्रिक विशेषताओं को उजागर करना चाहती हूँ। जिसका आगे चलकर अन्य शोधकर्ताओं को इसका बहुमुल्य उपयोग होगा।

शोध की मूल स्त्रोत-सामग्री :-

(१) 'तीन-वर्ष'-(१९३६), श्री भगवतीचरण वर्मा

(२) 'वह फिर नहीं आयी'-(१९६०), श्री भगवतीचरण वर्मा

(३) 'रेखा'-(१९६४), श्री भगवतीचरण वर्मा

(४) 'आखिरी दाँव'-(१९५०), श्री भगवतीचरण वर्मा

(५) 'चित्रलेखा'-(१९३४), श्री भगवतीचरण वर्मा

(६) 'अपने खिलोने'-(१९५७), श्री भगवतीचरण वर्मा

१) 'विरलेले स्वप्न'-(१९३५), विभावरी शिरुरकर

२) 'दोघांचे विश्व'-(१९५४), विभावरी शिरुरकर

३) 'जाई '- विभावरी शिरुरकर

४) 'शबरी'- विभावरी शिरुरकर

५) 'हिंदोळ्यावर' -(१९३४), विभावरी शिरुरकर

६) 'कळ्यांचे निःश्वास'-(१९३३), विभावरी शिरुरकर

संदर्भ सहायक ग्रंथ सुची :-

१) महिला सशक्तीकरण-दशा और दिशा-मनीष कुमार ।

२) हरिभाऊ आपटे व मुन्शी प्रेमचंद -डॉ. हरिभाऊ पाटील

३) मंजुल भगत कथा साहित्य; में नारी रूप- डॉ.शेख शहेनाज बेगम अहेमद।

४) श्री भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों, में नारी- डॉ. नीता रत्नेश ।

५) संत तुकाराम व कबीर- डॉ. हरिभाऊ पाटील

६) उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा- एक अध्ययन- डॉ. ललिता अरोडा ।

७) पुर्व प्रेमचंद युगीन हिंदी-उर्दू उपन्यासोंका तुलनात्मक अध्ययन-डॉ. तस्नीम सुहेल

८) निराला और मुक्तीबोध के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन -डॉ. ओम प्रकाश झंवर

शोध निर्देशक

प्रा. डॉ. शेख शहेनाज बेगम अहेमद
हिन्दी विभाग
हुतात्मा जयवंतराव पाटिल महाविद्यालय
हिमायतनगर जि. नांदेड (महाराष्ट्र)

शोध छात्रा

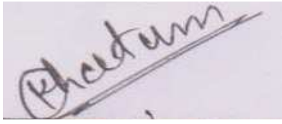

कु. पठाण खातून बेगम अकबर खॉन